समाचार वाणी
ख़बर जो करें असर !

नाशिक | Tuesday, 18 August 2026

भारत-चीन या अमेरिका ? नेपाल की नई PM सुशीला कार्की के सामने बड़ी कूटनीतिक चुनौती

Publisher

Published on 17 Sep 2025

नेपाल की राजनीति में एक नया अध्याय शुरू हुआ है। हाल ही में **सुशीला कार्की** ने नेपाल की नई प्रधानमंत्री के रूप में शपथ ली है। देश की पहली महिला प्रधान न्यायाधीश रह चुकीं सुशीला कार्की अब कार्यपालिका का नेतृत्व कर रही हैं। उनके सामने सबसे बड़ी चुनौती है – **राजनीतिक स्थिरता कायम करना और कूटनीतिक रिश्तों मे संतुलन बनाना।**

सुशीला कार्की के सामने चुनौतियां

नेपाल में सरकार बदलना कोई नई बात नहीं है। पिछले कुछ वर्षों में यहां राजनीतिक अस्थिरता ने देश के विकास और विदेश नीति पर गहरा असर डाला है। **विदेश मंत्री का पद खाली** है, जिससे कूटनीतिक फैसले लेना और मुश्किल हो गया है। देश के अंदरूनी राजनीतिक समीकरण जटिल बने हुए हैं। आर्थिक सुधार और विकास परियोजनाओं को तेज करना एक और बड़ा काम है। सुशीला कार्की को इन सभी चुनौतियों से निपटते हुए संतुलित नेतृत्व देना होगा।

भारत से रिश्तों की अहमियत

नेपाल और भारत के बीच **ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और भौगोलिक संबंध** हैं। भारत, नेपाल का सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार है। हजारों नेपाली नागरिक भारत में काम करते हैं और रहते हैं। खुले सीमा समझौते के कारण दोनों देशों के लोगों के बीच आवाजाही आसान है। लेकिन पिछले कुछ वर्षों में नेपाल और भारत के रिश्तों में खटास भी आई है। नई सरकार के लिए यह अहम होगा कि वह भारत से रिश्तों में **विश्वास बहाली** करे।

चीन की बढ़ती पकड़

भारत के अलावा **चीन** भी नेपाल में अपनी पैठ लगातार बढ़ा रहा है। बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (BRI) के तहत चीन ने नेपाल में कई प्रोजेक्ट शुरू किए हैं। सड़क, रेल और इंफ्रास्ट्रक्चर पर चीन का निवेश नेपाल की अर्थव्यवस्था में बड़ा रोल निभा रहा है।

हालांकि, चीन की बढ़ती उपस्थिति भारत-नेपाल रिश्तों में असंतुलन पैदा कर सकती है। सुशीला कार्की को तय करना होगा कि नेपाल चीन के साथ किस हद तक साझेदारी बढ़ाए, ताकि भारत के साथ रिश्ते खराब न हों।

अमेरिका का प्रभाव और रणनीति

नेपाल की विदेश नीति में **अमेरिका** भी अहम भूमिका निभाता है। अमेरिका नेपाल को विकास सहयोग और वित्तीय सहायता देता है। मिलेनियम चैलेंज कॉर्पोरेशन (MCC) जैसे प्रोजेक्ट नेपाल में विवाद का कारण भी बने हैं। अमेरिका, नेपाल को लोकतांत्रिक मूल्यों और रणनीतिक साझेदारी में आगे देखना चाहता है। इसलिए नेपाल को यह तय करना होगा कि वह अमेरिका के साथ सहयोग को किस दिशा में ले जाए।

राजनीतिक स्थिरता – सबसे बड़ी जरूरत

नेपाल की जनता लंबे समय से राजनीतिक अस्थिरता से परेशान है। बार-बार सरकार बदलने से विकास योजनाएं अधूरी रह जाती हैं। निवेशक भी अस्थिर माहौल में जोखिम लेने से हिचकते हैं। जनता चाहती है कि नई सरकार रोजमर्रा की समस्याओं जैसे बिजली, पानी, रोजगार और महंगाई पर ध्यान दे। सुशीला कार्की के नेतृत्व में अगर राजनीतिक स्थिरता आती है, तो नेपाल विकास की दिशा में बड़ा कदम बढ़ा सकता है।

वैश्विक दबाव और संतुलन की राजनीति

नेपाल की भौगोलिक स्थिति उसे एक **स्ट्रैटेजिक हब** बना देती है। उत्तर में चीन और दक्षिण में भारत होने से नेपाल को दोनों के बीच संतुलन साधना होता है। अमेरिका भी अपने हितों को साधने के लिए नेपाल को अहम मानता है। अगर सरकार किसी एक देश की ओर ज्यादा झुकाव दिखाती है, तो दूसरे देशों के साथ रिश्ते बिगड़ सकते हैं। इसलिए नई प्रधानमंत्री को बेहद सावधानी से विदेश नीति बनानी होगी।

विकास की राह

विदेश नीति के अलावा नेपाल सरकार के सामने **विकास की चुनौतियां** भी हैं। बेरोजगारी और पलायन रोकना। पर्यटन को बढ़ावा देना। शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार करना। इंफ्रास्ट्रक्चर प्रोजेक्ट्स को तेजी से पूरा करना। इन क्षेत्रों में कामयाबी हासिल करने के लिए सरकार को स्थिर और प्रभावी नीतियां बनानी होंगी।

नेपाल की नई प्रधानमंत्री **सुशीला कार्की** के सामने बड़ी जिम्मेदारी है। उन्हें न सिर्फ राजनीतिक स्थिरता कायम करनी होगी, बल्कि भारत, चीन और अमेरिका जैसे देशों के साथ संतुलन भी साधना होगा।

नेपाल के लिए यह समय बेहद अहम है, क्योंकि गलत कूटनीतिक कदम उसे किसी एक देश के प्रभाव में धकेल सकता है। वहीं, सही संतुलन उसे विकास और अंतरराष्ट्रीय सहयोग की नई राह पर ले जा सकता है।

DISCLAIMER: the views/contents expressed/presented herein, within this advertorial and promotional feature are the sole and exclusive responsibility of individual clients/expert/their authorised representative/Publisher, to which effect, publication house/its representative/affiliates are not responsible/liable whatsover.